हे गुरुदेव हिरदय में पधराइएगा

आर्यिका विमलांत श्री माताजी (संघस्थ)

हे गुरुदेव हिरदय में पधराइएगा
सुमन बन हूँ अर्पित, न ठुकराइएगा।। हे गुरुदेव...

गुरुभक्ति गंगा का लेकर सहारा,
भावों की वेदी को हमने सँवारा,
कि तारण तारण बन चले आइएगा
हृदय आइएगा, न फिर जाइएगा।। हे गुरुदेव...

हृदय के कमल पर बिठाया है तुमको
आतम में अपने समाया है तुमको
कि अपने ही जैसा बना लीजिएगा।।
शरण दीजिएगा, शरण लीजिएगा....

भावों से भरकर के जिसने पुकारा
विपदा में आकर के दीना सहारा
भव भव में भक्ति का वर दीजिएगा।।
शरण दीजिएगा, शरण लीजिएगा....

गुरु तेरी महिमा को गाते रहेंगे,
चरणों में मस्तक झुकाते रहेंगे
कर्मों के बंधन छुड़ा दीजिएगा।।
शरण दीजिएगा, शरण लीजिएगा....

उपसर्ग जेता हे गुरुवर हमारे!
भक्तों के संकट पल में निवारे
कि श्रद्धा समर्पण से भर दीजिएगा।।
शरण दीजिएगा, शरण लीजिएगा....

जिनधर्म रक्षक भी तुमको पुकारे
अरिहंत स्वामी तुम्हीं हो हमारे
सेवा का अवसर सदा दीजिएगा।।
शरण दीजिएगा, शरण लीजिएगा....

शांतिप्रभु के कहलाते नंदन,
सारा जहाँ करता चरणों में वंदन,
कृपादृष्टि सेवक पे कर दीजिएगा।।
शरण दीजिएगा, शरण लीजिएगा....

है चरणों में इतनी सी विनती हमारी,
भक्ती में बीते उमरिया ये सारी,
कि अपने ही रंग में रंगा लीजिएगा।।
शरण दीजिएगा, शरण लीजिएगा